ब्राह्मण का सपना

एक नगर मे कोई कंजूस ब्राह्मण रहता था। उसने भिक्षा से प्राप्त सत्तुओ मे से थोडे से खाकर शेष से एक घडा भर लिया था। उस घडे को उसने रस्सी से बांधकर खूंटी पर लटका दिया और उसके नीचे पास ही खटिया डालकर उसपर लेटे-लेटे विचित्र सपने लेने लगा, और कल्पना के हवाई घोडे दौडाने लगा।

उसने सोचा कि जब देश मे अकाल पडेगा तो इन सत्तुओं का मूल्य १०० रुपये हो जायगा। उन सौ रुपयो से मैं दो बकरियां लूँगा। छः महीने मे उन दो बकरियो से कई बकरिये बन जायंगी। उन्हे बेचकर एक गाय लूंगा। गौओ के बाद भैंसे लूंगा और फिर घोडे ले लूंगा।

घोडो को महंगे दामो मे बेचकर मेरे पास बहुत सा सोना हो जायगा। सोना बेचकर मैं बहुत बडा घर बनाऊँगा। मेरी सम्पत्ति को देखकर कोई भी ब्राह्मण अपनी सुरुपवती कन्या का विवाह मुझसे कर देगा। वह मेरी पत्नी बनेगी। उससे जो पुत्र होगा उसका नाम मैं सोमशर्मा रखूंगा।

जब वह घुटनो के बल चलना सीख जायेगा तो मैं पुस्तक लेकर घुडशाला के पीछे की दीवार पर बैठा हुआ उसकी बाल-लीलाये देखूंगा। उसके बाद सोमशर्मा मुझे देखकर मां की गोद से उतरेगा और मेरी ओर आयेगा तो मैं उसकी मां को क्रोध से कहूँगा- "अपने बच्चे को संभाल।"

वह गृह-कार्य मे व्यग्र होगी, इसलिये मेरा वचन न सुन सकेगी। तब मैं उठकर उसे पैर की ठोकर से मारुंगा। यह सोचते ही उसका पैर ठोकर मारने के लिये ऊपर उठा। वह ठोकर सत्तु-भरे घडे को लगी। घडा चकनाचूर हो गया। कंजूस ब्राह्मण के स्वप्न भी साथ ही चकनाचूर हो गये ।

कथा सुनकर सुवर्णसिद्धि ने कहा, “ठीक कहते हो, लोभवश लोग इसी प्रकार दुःख पाते

है। जो व्यक्ति परिणाम पर बिना विचार किए जल्दबाजी मे कोई काम करता है, उसे राजा चंद्र की तरह ही दुखी होना पडता है ।"

चक्रधर ने पूछा, “वह कैसे?"

सुवर्णसिद्धि बताने लगा--

वानरराज का बदला

ब्राह्मण का सपना

एक नगर में कोई कंजूस ब्राह्मण रहता था। उसने भिक्षा में प्राप्त सत्तुओं में से थोड़े से खाकर शेष से एक घड़ा भर लिया था। उस घड़े को उसने रस्सी से बाँधकर खूँटी पर लटका दिया और उसके नीचे पास ही खटिया डालकर उसपर लेटे-लेटे विचित्र सपने लेने लगा, और कल्पना के हवाई घोड़े दौड़ाने लगा।

उसने सोचा कि जब देश में अकाल पड़ेगा तो इन सत्तुओं का मूल्य 100 रुपये हो जाएगा। उन सौ रुपयों से मैं दो बकरियाँ लूँगा। छः महीने में उन दो बकरियों से कई बकरियाँ बन जाएँगी। उन्हें बेचकर एक गाय लूँगा। गौओं के बाद भैंसें लूँगा और फिर घोड़े लूँगा।

घोड़ों को महंगे दामों में बेचकर मेरे पास बहुत सा सोना हो जाएगा। सोना बेचकर मैं बहुत बड़ा घर बनाऊँगा। मेरी सम्पत्ति को देखकर कोई भी ब्राह्मण अपनी रूपवती कन्या का विवाह मुझसे कर देगा। वह मेरी पत्नी बनेगी। उससे जो पुत्र होगा उसका नाम मैं सोमशर्मा रखूँगा।

जब वह घुटनों के बल चलना सीख जाएगा तो मैं पुस्तक लेकर घुड़साला के पीछे की दीवार पर बैठा हुआ उसकी बाल-लीलाएँ देखूँगा। उसके बाद सोमशर्मा मुझे देखकर माँ की गोद से उतरेगा और मेरी ओर आएगा तो मैं उसकी माँ को क्रोध से कहूँगा- "अपने बच्चे को संभाल।"

वह गृह-कार्य में व्यस्त होगी, इसलिए मेरा वचन न सुन सकेगी। तब मैं उठकर उसे पैर की ठोकर से मारूँगा। यह सोचते ही उसका पैर ठोकर मारने के लिए ऊपर उठा। वह ठोकर सत्तू भरे घड़े को लगी। घड़ा चकनाचूर हो गया। कंजूस ब्राह्मण के सपने भी साथ ही चकनाचूर हो गए।

कथा सुनकर सुवर्णसिद्धि ने कहा, "ठीक कहते हो, लोभवश लोग इसी प्रकार दुःख पाते हैं। ये बुद्धि-परिणाम पर बिना विचार किए जल्दबाजी में कोई काम करते हैं, उसे राजा चन्द्र की तरह ही दुःखी होना पड़ता है।"

चक्रधर ने पूछा, "वह कैसे?"

सुवर्णसिद्धि सुनाने लगा—

अनुवाद - विष्णु कौल एला